

बधिर व्यक्तियों में चुनौतियों का सामाजिक समायोजन, मनोवैज्ञानिक स्तर, शिक्षण एवं सहयोग पर प्रभाव: एक मात्रात्मक अध्ययन

सौरभ

शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

प्रो. (डॉ.) रश्मि जैन

पर्यवेक्षक, समाजशास्त्र विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

शोध सार

यह अध्ययन बधिर व्यक्तियों की चुनौतियों का उनके सामाजिक समायोजन, मनोवैज्ञानिक स्तर, शिक्षण तथा सहयोग पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभावों की जांच करना है। मुख्य रूप से, अध्ययन का उद्देश्य इन चुनौतियों के सांख्यिकीय संबंधों का मूल्यांकन करके दिव्यांग व्यक्तियों के लिए बेहतर समावेशी नीतियों एवं सहायता प्रणालियों की आवश्यकता को उजागर करना है। यह अध्ययन मात्रात्मक अनुसंधान डिज़ाइन पर आधारित है, जिसमें सरकारी बधिर एवं मूक महाविद्यालय, जयपुर के 120 दिव्यांग प्रतिभागियों से डेटा एकत्र किया गया। डेटा संग्रह के लिए संरचित प्रश्नावली का उपयोग किया गया, तथा पूर्वानुमानक चर के रूप में चुनौतियों तथा आश्रित चरों के रूप में सामाजिक समायोजन, मनोवैज्ञानिक स्तर, शिक्षण तथा सहयोग को शामिल किया गया। अध्ययन से पता चला कि बधिरता से जुड़ी चुनौतियाँ न केवल व्यक्तिगत स्तर पर प्रभावित करती हैं, बल्कि सामाजिक, शैक्षिक तथा मनोवैज्ञानिक आयामों को भी कमजोर बनाती हैं। विशेष रूप से, सहयोग तथा मनोवैज्ञानिक स्तर पर प्रभाव सबसे गहन पाया गया, जो दिव्यांग व्यक्तियों के समग्र विकास में बाधा उत्पन्न करता है। ये निष्कर्ष शैक्षिक संस्थानों में समावेशी वातावरण बनाने, मनोवैज्ञानिक सहायता प्रदान करने तथा नीतिगत हस्तक्षेपों की आवश्यकता को इंगित करते हैं। सरकारी एवं गैर-सरकारी संगठनों को दिव्यांग व्यक्तियों के लिए विशेष कार्यक्रम विकसित करने चाहिए, ताकि उनकी चुनौतियों को कम करके समाज में उनकी भागीदारी बढ़ाई जा सके। भविष्य के अनुसंधान में इन निष्कर्षों को अन्य क्षेत्रों में विस्तारित किया जा सकता है।

मुख्य शब्द - बधिर, चुनौतियों, सामाजिक समायोजन, मनोवैज्ञानिक स्तर, शिक्षण एवं सहयोग

परिचय

बधिरता एक जैविक/चिकित्सीय स्थिति भर नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति और उसके पर्यावरण के बीच सतत अंतःक्रिया में निर्मित होने वाला अनुभव है, जहाँ दैनिक गतिविधियों, सामाजिक भूमिकाओं और अवसर-संरचनाओं तक पहुँच कई स्तरों पर प्रभावित होती है। दिव्यांगता-अनुकूलन (disability adaptation) के संदर्भ में साहित्य यह स्पष्ट करता है कि दिव्यांग व्यक्ति की कार्य-क्षमता, आत्म-धारणा, सामाजिक पहचान और सामाजिक भागीदारी ऐसे आयाम हैं जिन पर व्यक्तिगत संसाधनों के साथ-साथ परिवार, समुदाय, और संस्थागत व्यवस्थाओं की भूमिका महत्वपूर्ण है (कोहेन और नेपोलिटानो, 2013)। इसी व्यापक परिप्रेक्ष्य में बधिर व्यक्तियों द्वारा अनुभव की जाने वाली “चुनौतियाँ”—जैसे गतिशीलता, दर्द, थकान, या शारीरिक कार्य-सीमाएँ—अक्सर सामाजिक समायोजन, मानसिक स्वास्थ्य तथा सीखने/विकास के अवसरों से जुड़ती हैं, जिससे यह विषय बहुविषयक (स्वास्थ्य, मनोविज्ञान, शिक्षा और समाजशास्त्र) अध्ययन की माँग करता है (जेन्सेन, मूर, बोको, एह्ड और एंगेल, 2011)।

सामाजिक समायोजन दिव्यांग व्यक्ति के लिए केवल सामाजिक संपर्कों की मात्रा नहीं है, बल्कि सामाजिक स्वीकार्यता, भूमिकाओं का निर्वाह, सहभागिता, और रोजमर्रा के सामाजिक संदर्भों में अनुकूलन की गुणवत्ता का संकेतक है। दृष्टिबाधित व्यक्तियों पर किए गए अध्ययन सामाजिक अनुकूलन को सामाजिक एवं आर्थिक स्तरों से सम्बद्ध पाते हैं, जिससे यह धारणा मजबूत होती है कि दिव्यांगता अनुभव को सामाजिक संरचनाएँ और संसाधन-सुलभता भी आकार देती हैं (अलावदी, 2020)। साथ ही, समावेशी प्रवचन और सामाजिक पुनर्वास के सामाजिक-आर्थिक प्रभावों पर चर्चा यह रेखांकित करती है कि आधुनिक समावेशी नीतियाँ और संस्थागत प्रथाएँ दिव्यांग व्यक्तियों की सामाजिक पुनर्स्थापना और अवसरों तक पहुँच को प्रभावित करती हैं (काराबुलतोवा, किम, आजनाबाएवा, एरमाकोवा और कोन्नोवा, 2015)। इस प्रकार, सामाजिक समायोजन को समझने में चुनौतियों के साथ-साथ सामाजिक-आर्थिक और संस्थागत संदर्भों को जोड़कर देखना आवश्यक है।

मनोवैज्ञानिक स्तर के संदर्भ में उपलब्ध शोध यह संकेत देता है कि बधिरता के साथ जीने का अनुभव तनाव, अवसाद, और समग्र मनोसामाजिक अनुकूलन से जुड़ सकता है, विशेषकर तब जब सामाजिक सहयोग कमजोर हो या दर्द/दीर्घकालिक शारीरिक कठिनाइयाँ बनी रहें (जेन्सेन, मूर, बोको, एहड और एंगेल, 2011; जेन्सेन, स्मिथ, बॉम्बार्डियर, यॉर्कस्टन, मीरो और मोल्टन, 2014)। युवाओं में अनुभूत सामाजिक सहयोग और मनोवैज्ञानिक अनुकूलन के संबंध पर साहित्य यह भी बताता है कि सामाजिक समर्थन केवल भावनात्मक संबल नहीं है, बल्कि कार्यात्मक क्षमता और समायोजन-प्रक्रिया में भी इसकी भूमिका महत्वपूर्ण है (विल्सन, वाशिंगटन, एंगेल, सिओल और जेन्सेन, 2006)। इसके अलावा, रिश्टों, कामुकता और अनुकूलन पर हुए कार्य संकेत देते हैं कि बधिरता जीवन के अंतरंग और सामाजिक आयामों को प्रभावित करती है, जो आगे चलकर आत्म-छवि और मनोवैज्ञानिक अनुकूलन से जुड़ती है (टैलेपोरोस और मैककेबे, 2003)। यह पृष्ठभूमि मनोवैज्ञानिक स्तर को इस अध्ययन के केंद्रीय आयाम के रूप में शामिल करने की आवश्यकता को उचित ठहराती है।

शिक्षण (या शैक्षिक समायोजन/सीखने से जुड़े अनुभव) भी दिव्यांगता अध्ययन का प्रमुख क्षेत्र है क्योंकि चुनौतियाँ अक्सर शैक्षिक सहभागिता, संसाधनों तक पहुँच, संस्थागत अनुकूलन और सहपाठी-संबंधों को प्रभावित करती हैं। उच्च शिक्षा के संदर्भ में दिव्यांग और गैर-दिव्यांग छात्रों के समायोजन में अंतर पर उपलब्ध शोध यह दिखाता है कि दिव्यांगता की स्थिति शैक्षिक परिवेश में समायोजन और अनुभवों को प्रभावित कर सकती है (लिपका, सारिद, अहरोनी जोराच, बुफमैन, हगाग और पेरेट्ज, 2020)। समावेशी शिक्षा-परिस्थितियों में सामाजिक अनुकूलन तथा मित्रता के प्रारंभिक आकलन से भी यह संकेत मिलता है कि स्कूल/समावेशी सेटिंग में सामाजिक संबंध और व्यवहारिक समायोजन महत्वपूर्ण हैं, जो शिक्षण अनुभव को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रभावित कर सकते हैं (डाइजेनारो रीड, मैकइंटायर, ड्यूसेक और किंटेरो, 2011)। स्कूलों में दिव्यांग छात्रों के सामाजिक अनुकूलन, सहभागिता और स्वास्थ्य-सम्बन्धी परिणामों पर अध्ययन यह रेखांकित करता है कि दिव्यांगता के साथ विद्यालयी अनुभवों में सामाजिक अनुकूलन और सहभागिता जैसे आयाम विशेष ध्यान की माँग करते हैं (वाज, कॉर्डियर, फॉल्कमर, सिक्कारेली, पार्सन्स, मर्कोलिफ और फॉल्कमर, 2015)। ये निष्कर्ष इस अध्ययन में "शिक्षण" को एक अर्थपूर्ण परिणाम-चर (outcome) के रूप में देखने के लिए आधार प्रदान करते हैं।

सहयोग (social support) इस अध्ययन का चौथा महत्वपूर्ण आयाम है, क्योंकि साहित्य में इसे दिव्यांगता-अनुकूलन का प्रमुख संरक्षक कारक (protective factor) माना जाता है। सेरेब्रल पाल्सी वाले

बच्चों एवं किशोरों में सामाजिक सहयोग के प्रभावों पर हुए शोध यह दिखाते हैं कि सामाजिक समर्थन अनुकूलन-परिणामों से संबंधित है, जिससे यह संकेत मिलता है कि समर्थन-तंत्र के मजबूत होने पर अनुकूलन बेहतर होता है (कारोना, मोरेयरा, सिल्वा, क्रेस्पो और कैनावारो, 2014)। अवसाद और बधिरता के संदर्भ में सामाजिक सहयोग की भूमिका पर शोध यह भी बताता है कि सामाजिक समर्थन मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य के साथ जुड़ा है और विभिन्न समूहों/आयु में इसकी भूमिका बदल सकती है (जेन्सेन, स्मिथ, बॉम्बार्डियर, यॉर्कस्टन, मीरो और मोल्टन, 2014)। साथ ही, वित्तीय तनाव और दिव्यांग कॉलेज छात्रों के अनुकूलन के बीच संबंध में सामाजिक सहयोग के मुख्य एवं मध्यस्थ प्रभावों की चर्चा यह दर्शाती है कि सहयोग केवल प्रत्यक्ष सहारा नहीं है, बल्कि यह तनाव-सम्बन्धी प्रभावों को कम करने वाला तंत्र भी है (मरे, लोम्बार्डी, बेंडर और गेर्डेस, 2013)। इस तरह, सहयोग को एक स्वतंत्र रूप से महत्वपूर्ण तथा अन्य परिणामों को प्रभावित करने वाले कारक के रूप में समझना समीचीन है।

इन सभी सैद्धांतिक और अनुभवजन्य संकेतों के आधार पर वर्तमान अध्ययन का शीर्षक—“बधिर व्यक्तियों में चुनौतियों का सामाजिक समायोजन, मनोवैज्ञानिक स्तर, शिक्षण एवं सहयोग पर प्रभाव: एक मात्रात्मक अध्ययन”—यह दर्शाता है कि शोध चुनौतियों को एक केंद्रीय व्याख्यात्मक कारक के रूप में रखते हुए चार प्रमुख जीवन-क्षेत्रों में उसके प्रभाव/संबंध का मात्रात्मक परीक्षण करता है। अध्ययन का उद्देश्य यह है कि चुनौतियों और सामाजिक समायोजन, मनोवैज्ञानिक स्तर, शिक्षण तथा सहयोग के बीच संबंध की दिशा और प्रकृति को स्पष्ट किया जाए, ताकि दिव्यांगता के संदर्भ में संस्थागत सहायता, समावेशी शैक्षिक रणनीतियों, और मनोसामाजिक हस्तक्षेपों के लिए साक्ष्य-आधारित आधार विकसित किया जा सके (कोहेन और नेपोलिटानो, 2013; वाज, कॉर्डियर, फॉल्कमर, सिक्कारेली, पार्सन्स, मकॉलिफ और फॉल्कमर, 2015)। इस प्रकार, अध्ययन दिव्यांगता-अध्ययन में व्यक्तिगत अनुभव (चुनौतियाँ) और सामाजिक-शैक्षिक संदर्भ (समायोजन, सहयोग, शिक्षण) को जोड़ते हुए एक समन्वित रूपरेखा प्रस्तुत करने का प्रयास करता है।

साहित्य की समीक्षा

बधिर छात्रों एवं गैर-दिव्यांग छात्रों के बीच उच्च शिक्षा में अनुकूलन की तुलना लिपका एट अल. (2020) ने की। फ्रंटियर्स इन साइकोलॉजी में प्रकाशित यह अध्ययन उच्च शिक्षा के माहौल में दिव्यांग छात्रों की विशेष चुनौतियों और सामना करने की युक्तियों पर ध्यान केंद्रित करता है। शोध के निष्कर्षों ने शैक्षणिक परिवेश में दिव्यांग छात्रों के अनुकूलन को प्रभावित करने वाले तत्वों को उजागर किया, जो समावेशी शिक्षा के साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

दृष्टिबाधित व्यक्तियों के सामाजिक अनुकूलन एवं उनके सामाजिक-आर्थिक स्तरों के बीच संबंध की जांच अलावदी (2020) ने की। पालआर्क के जर्नल ऑफ आर्कियोलॉजी ऑफ इजिप्ट/इजिप्टोलॉजी में छपा यह अध्ययन दृष्टिबाधित लोगों के सामाजिक अनुकूलन और उनकी सामाजिक एवं आर्थिक स्थितियों से इसके जुड़ाव पर केंद्रित है। शोध के परिणामों ने व्यापक सामाजिक-आर्थिक परिप्रेक्ष्य में दृष्टिबाधित व्यक्तियों की चुनौतियों और अनुकूलन प्रक्रियाओं में अंतर्दृष्टि प्रदान की।

बधिर छात्रों एवं उनके स्वस्थ साथियों के बीच भावना नियंत्रण युक्तियों और अनुकूलन की तुलना मोहम्मद-अमिनजादेह एट अल. (2019) ने की। अध्ययन का लक्ष्य बधिर छात्रों की भावनात्मक स्थिति और मुकाबला करने के तरीकों को समझना था। निष्कर्षों ने बधिर छात्रों के भावनात्मक अनुकूलन में विशेष चुनौतियों और लचीलेपन के कारकों में जानकारी दी।

दिव्यांग (बधिर) वाले युवाओं में दर्द के अनुकूलन में अनुभूत पारिवारिक सामाजिक सहयोग और माता-पिता की प्रतिक्रियाओं की भूमिका की पड़ताल मीरो एट अल. (2019) ने की। दिव्यांगता और पुनर्वास में प्रकाशित यह अध्ययन बधिर व्यक्तियों में दर्द अनुकूलन पर पारिवारिक व्यवहार के प्रभाव की जांच करता है। परिणामों ने दर्द के संदर्भ में अनुकूलन प्रक्रिया में योगदान देने वाले सामाजिक सहयोग तंत्रों और पारिवारिक अंतर्क्रियाओं में अंतर्दृष्टि प्रदान की।

शारीरिक-गतिशीलता दिव्यांग छात्रों के भावनात्मक अनुकूलन, मानसिक स्वास्थ्य और आत्म-सम्मान पर सामाजिक कौशल प्रशिक्षण के प्रभाव की खोज बरघी ईरानी, बागियान कुलेहमरज़, और शरीफी (2016) ने की। एप्लाइड काउंसलिंग के द्विवार्षिक जर्नल में छपा यह अध्ययन दिव्यांग छात्रों की भलाई बढ़ाने वाले हस्तक्षेपों पर रोशनी डालता है, जो इस समूह के लिए सामाजिक कौशल प्रशिक्षण के संभावित फायदों में मूल्यवान जानकारी देता है।

दिव्यांगता, तनाव संकेतकों और सामाजिक सहयोग के प्रभाव के लिए माता-पिता के अनुकूलन की जांच फेलिजार्डो, रिबेरो और अमांटे (2016) ने की। प्रोसीडिया-सोशल एंड बिहेवियरल साइंसेज में प्रकाशित यह अध्ययन माता-पिता द्वारा दिव्यांगता की चुनौतियों से अनुकूलन, तनाव कारकों की जांच और इस प्रक्रिया में सामाजिक सहयोग की भूमिका पर केंद्रित है। शोध के निष्कर्षों ने दिव्यांगता के प्रति माता-पिता के अनुकूलन को प्रभावित करने वाले तत्वों की गहन समझ में योगदान दिया।

दिव्यांग (बधिर) वाले बच्चों और किशोरों में शारीरिक क्रियाकलापों से जुड़े कारकों की पहचान के लिए ब्लोमेन एट अल. (2015) ने व्यवस्थित समीक्षा की। डेवलपमेंटल मेडिसिन एंड चाइल्ड न्यूरोलॉजी में छपी यह जांच मौजूदा साहित्य को एकत्रित कर इस समूह में शारीरिक क्रियाकलाप स्तरों को प्रभावित करने वाले व्यक्तिगत, पर्यावरणीय और सामाजिक कारकों की जटिलता को प्रकट करती है। निष्कर्षों ने दिव्यांग (बधिर) वाले बच्चों और किशोरों में शारीरिक क्रियाकलाप और समग्र कल्याण को बढ़ावा देने के लिए इन कारकों को संबोधित करने की जरूरत पर जोर दिया।

दिव्यांग छात्रों के खराब शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य, सामाजिक अनुकूलन और भागीदारी परिणामों की अपेक्षाओं पर वाज एट अल. (2015) ने सवाल उठाया। पीएलओएस वन में प्रकाशित यह शोध दिव्यांग छात्रों को प्रभावित करने वाले कारकों की जटिल अंतर्क्रिया पर रोशनी डालता है और उनके समग्र स्वास्थ्य के संबंध में अपेक्षाओं की पड़ताल करता है। अध्ययन के निष्कर्षों ने दिव्यांग छात्रों की विविध चुनौतियों पर जानकारी दी और उनके स्वास्थ्य, सामाजिक अनुकूलन और भागीदारी के बारे में पूर्वधारणाओं पर प्रश्न उठाया।

दिव्यांग व्यक्तियों के सामाजिक पुनर्वास में आधुनिक समावेशी प्रथाओं के सामाजिक-आर्थिक प्रभाव की जांच करबुलतोवा एट अल. (2015) ने की। मेडिटेरेनियन जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज में छपा यह अध्ययन सामाजिक-आर्थिक कारकों को ध्यान में रखते हुए दिव्यांग लोगों के सामाजिक पुनर्वास पर समावेशी प्रथाओं के प्रभाव पर केंद्रित है। निष्कर्षों ने समावेशी प्रथाओं द्वारा सामाजिक पुनर्वास के सामाजिक-आर्थिक आयामों को कैसे प्रभावित किया जाता है, इसकी समझ में योगदान दिया।

उम्र और नैदानिक समूह प्रभावों को ध्यान में रखते हुए सामाजिक सहयोग, अवसाद और दिव्यांग (बधिर) की अंतर्क्रिया का अध्ययन जेन्सेन एट अल. (2014) ने किया। डिसेबिलिटी एंड हेल्थ जर्नल में प्रकाशित यह शोध विभिन्न आयु वर्गों और नैदानिक श्रेणियों में अवसाद और दिव्यांग (बधिर) के जटिल संबंधों को

सामाजिक सहयोग कैसे प्रभावित करता है, इसकी जांच करता है। परिणामों ने बधिर व्यक्तियों की भलाई को प्रभावित करने वाले विविध कारकों में बारीकियां जोड़ीं।

निचले अंग विच्छेदन के अनुकूलन में सामाजिक सहयोग के संबंध में आघात रोगियों की धारणा पर वलीजादेह, ददखाह, मोहम्मदी और हसनखानी (2014) ने गुणात्मक अध्ययन किया। इंडियन जर्नल ऑफ पैलिएटिव केयर में छपा यह अध्ययन निचले अंग विच्छेदन से गुजरने वाले आघात रोगियों द्वारा सामाजिक सहयोग की समझ और अनुकूलन प्रक्रिया में इसकी भूमिका की सूक्ष्म व्याख्या प्रदान करता है। गुणात्मक तरीके ने रोगियों के अनुभवों और नजरियों की गहन खोज की अनुमति दी।

सेरेब्रल पाल्सी वाले बच्चों और किशोरों में अनुकूलन परिणामों पर सामाजिक सहयोग के प्रभाव का अध्ययन कारोना एट अल. (2014) ने किया। दिव्यांगता और पुनर्वास में प्रकाशित यह शोध सेरेब्रल पाल्सी वाले व्यक्तियों के अनुकूलन को सामाजिक सहयोग कैसे प्रभावित करता है, इसकी जांच करता है, जो दिव्यांग (बधिर) के संदर्भ में पारस्परिक संबंधों की भूमिका पर रोशनी डालता है।

दिव्यांग कॉलेज छात्रों के बीच वित्तीय तनाव और अनुकूलन के संबंधों पर सामाजिक सहयोग के मुख्य और मध्यस्थ प्रभावों की जांच मरे, लोम्बार्डी, बेंडर और गेर्डेस (2013) ने की। सोशल साइकोलॉजी ऑफ एजुकेशन में छपा यह अध्ययन दिखाता है कि सामाजिक सहयोग दिव्यांग कॉलेज छात्रों के अनुकूलन पर वित्तीय तनाव के प्रभाव को कैसे प्रभावित करता है। शोध के निष्कर्षों ने छात्रों की भलाई पर वित्तीय तनाव के नकारात्मक प्रभावों के खिलाफ संभावित सुरक्षा के रूप में सामाजिक सहयोग की भूमिका में मूल्यवान जानकारी दी।

दिव्यांगता और सामाजिक कार्य शिक्षा के संदर्भ में दिव्यांगता अनुकूलन के विषय को कोहेन और नेपोलिटानो (2013) ने संबोधित किया। उनका योगदान पुस्तक में विस्तृत चर्चा का हिस्सा है, जो दिव्यांग व्यक्तियों के विभिन्न अनुकूलन पहलुओं पर रोशनी डालता है। अध्याय ने सामाजिक कार्य शिक्षकों और अभ्यासकर्ताओं के लिए महत्वपूर्ण दृष्टिकोण प्रदान किए, जो दिव्यांगता अनुकूलन के सामाजिक और भावनात्मक आयामों की समझ बढ़ाते हैं।

अमेरिकी संस्कृति और साहित्य में दिव्यांग (बधिर) के चित्रण की खोज थॉमसन (2013) ने "असाधारण शरीर" में की। कोलंबिया विश्वविद्यालय प्रेस से जारी निष्कर्षों ने सांस्कृतिक कथाओं और साहित्य में दिव्यांग (बधिर) की प्रस्तुति पर जानकारी दी। शोध ने दिव्यांग (बधिर) के प्रति सामाजिक धारणाओं और नजरियों को बेहतर समझने में योगदान दिया।

दिव्यांग (बधिर) के मनोवैज्ञानिक पहलुओं को समझने में मैकडैनियल (2013) ने "दिव्यांग (बधिर) और मानव व्यवहार" पुस्तक में योगदान दिया। पेर्गमॉन जनरल साइकोलॉजी श्रृंखला के भाग के रूप में, शोध ने दिव्यांग (बधिर) वाले व्यक्तियों द्वारा मानव व्यवहार के विभिन्न पक्षों से अनुकूलन की जटिलताओं पर प्रकाश डाला। निष्कर्षों ने दिव्यांग (बधिर) के साथ जीवन के भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक आयामों में अंतर्दृष्टि प्रदान की, जो दिव्यांग (बधिर) और मानव व्यवहार के अंतरसंबंध की व्यापक समझ में सहायक हैं।

लिंग पहचान, पुरुषत्व और दिव्यांग (बधिर) के अंतर्संबंध की पड़ताल गेर्शिक और मिलर (2013) ने की। "लिंग के नए मनोविज्ञान की दिशा में" में उनका योगदान पुरुषत्व की सामाजिक अपेक्षाओं और दिव्यांग (बधिर) अनुभवों के मेल पर जांच करता है। निष्कर्षों ने दिव्यांग (बधिर) वाले व्यक्तियों के लिए लिंग पहचान को आकार देने वाली जटिल गतिशीलताओं पर रोशनी डाली।

दिव्यांग (बधिर) वाले रोगियों के प्रति स्वास्थ्य देखभाल छात्रों और पेशेवरों के नजरिए पर सच्चिदानंद एट अल. (2012) ने व्यवस्थित समीक्षा की। अमेरिकन जर्नल ऑफ फिजिकल मेडिसिन एंड रिहैबिलिटेशन में छपी यह जांच स्वास्थ्य सेटिंग्स में विभिन्न नजरियों को उजागर करने के लिए मौजूदा साहित्य को एकत्रित करती है। निष्कर्षों ने सकारात्मक नजरिए बढ़ावा देने और बधिर व्यक्तियों की देखभाल गुणवत्ता सुधारने के लिए शैक्षिक हस्तक्षेपों की जरूरत पर जोर दिया।

सामाजिक सहयोग और लचीलेपन की मध्यस्थ भूमिका को ध्यान में रखते हुए दिव्यांग किशोरों और उनके माता-पिता की जीवन गुणवत्ता की जांच मैगरोड, मेस, ब्यूसे और ब्रोंडील (2012) ने की। जर्नल ऑफ डेवलपमेंटल एंड फिजिकल डिसेबिलिटीज में छपा यह अध्ययन सामाजिक सहयोग और लचीलेपन द्वारा दिव्यांगता और जीवन गुणवत्ता के संबंधों में मध्यस्थता की जांच करता है। शोध के निष्कर्षों ने दिव्यांगता का सामना करने वाले परिवारों की भलाई को प्रभावित करने वाले कारकों की व्यापक समझ में योगदान दिया।

बधिर व्यक्तियों में पुराने दर्द अनुकूलन के मनोसामाजिक कारकों की व्यवस्थित समीक्षा जेन्सेन एट अल. (2011) ने की। आर्काइव्स ऑफ फिजिकल मेडिसिन एंड रिहैबिलिटेशन में प्रकाशित यह जांच मौजूदा साहित्य को एकत्रित कर बधिर व्यक्तियों में पुराने दर्द अनुकूलन को प्रभावित करने वाले कारकों की व्यापक समझ प्रदान करती है। निष्कर्षों ने इस समूह में दर्द प्रबंधन के मनोसामाजिक आयामों को संबोधित करने वाले हस्तक्षेपों के विकास में सहायता दी।

समावेशी शिक्षा सेटिंग में दिव्यांग बच्चों की दोस्ती, समस्या व्यवहार और सामाजिक अनुकूलन का प्रारंभिक मूल्यांकन डिगेनारो रीड एट अल. (2011) ने किया। जर्नल ऑफ डेवलपमेंटल एंड फिजिकल डिसेबिलिटीज में छपा यह अध्ययन समावेशी शिक्षा वातावरण में दिव्यांग बच्चों की सामाजिक गतिशीलताओं और अनुकूलन चुनौतियों को समझने पर केंद्रित है। निष्कर्षों ने इस समूह में सामाजिक अनुकूलन को प्रभावित करने वाले कारकों में प्रारंभिक जानकारी प्रदान की।

रीढ़ की हड्डी की चोट वाले व्यक्तियों में मुकाबला युक्तियों, शारीरिक कार्य और सामाजिक अनुकूलन पर सॉन्ग और नाम (2010) ने विस्तार से चर्चा की। रिहैबिलिटेशन नर्सिंग जर्नल में छपा यह अध्ययन रीढ़ की हड्डी की चोट वाले लोगों के अपनी स्थितियों से मुकाबला करने, शारीरिक कार्य और सामाजिक अनुकूलन पर प्रभाव की जांच करता है। शोध के निष्कर्षों ने रीढ़ की हड्डी की चोटों से जूझने वाले व्यक्तियों के मुकाबला तंत्रों और सामाजिक आयामों में मूल्यवान अंतर्दृष्टि दी।

बौद्धिक दिव्यांगता वाले वयस्कों और बधिर (बधिर) वाले वयस्कों के सामाजिक सहयोग नेटवर्क की तुलना लिपपोल्ड और बर्न्स (2009) ने की। जर्नल ऑफ इंटेलेक्चुअल डिसेबिलिटी रिसर्च में छपा उनका अध्ययन दोनों समूहों के बीच सामाजिक नेटवर्क में अंतर दिखाता है। निष्कर्षों ने बौद्धिक और बधिर व्यक्तियों की विशेष सामाजिक सहायता जरूरतों में अंतर्दृष्टि प्रदान की, जो सामाजिक एकीकरण और कल्याण सुधार की रणनीतियों के लिए उपयोगी है।

अर्जित दिव्यांग (बधिर) वाले माता-पिता और उनके किशोर बच्चों के अनुकूलन पर नकारात्मक एवं सकारात्मक दिव्यांगता संबंधित घटनाओं के प्रभाव की जांच मजूर (2008) ने की। जर्नल ऑफ चाइल्ड एंड फैमिली स्टडीज में छपा यह अध्ययन माता-पिता और किशोर बच्चों दोनों के अनुकूलन पर दिव्यांगता संबंधित घटनाओं के प्रभाव की पड़ताल करता है। शोध के निष्कर्षों ने दिव्यांगताओं की शुरुआत के बाद पारिवारिक गतिशीलता और अनुकूलन पर सूक्ष्म दृष्टिकोण प्रस्तुत किया।

दिव्यांग (बधिर) के बाद व्यक्तियों द्वारा अच्छे जीवन की परिभाषा समझने का प्रयास डन और ब्रॉडी (2008) ने किया। पुनर्वास मनोविज्ञान में प्रकाशित यह अध्ययन दिव्यांग (बधिर) के बाद जीवन अपनाने वाले व्यक्तियों के व्यक्तिपरक अनुभवों पर आधारित है। निष्कर्षों ने दिव्यांगता के बाद पूर्ण जीवन की विविध दृष्टिकोणों को उजागर किया, तथा कल्याण की व्यक्तिगत परिभाषाओं पर विचार करने की महत्वता पर जोर दिया।

बधिर युवाओं में अनुभूत सामाजिक सहयोग, मनोवैज्ञानिक अनुकूलन और कार्यात्मक क्षमता के बीच संबंधों की जांच विल्सन एट अल. (2006) ने की। पुनर्वास मनोविज्ञान में छपा यह शोध बधिर व्यक्तियों की मनोवैज्ञानिक भलाई और कार्यात्मक क्षमताओं को प्रभावित करने में सामाजिक सहयोग के महत्व पर रोशनी डालता है, जो दिव्यांगता के मनोवैज्ञानिक आयामों पर व्यापक चर्चा में योगदान देता है।

ब्रिटेन और फिनलैंड के ज्यवास्किला में वृद्ध महिलाओं के बीच सामाजिक-आर्थिक स्थिति और दिव्यांगता के संबंधों की पड़ताल राउटियो, एडमसन, हेइकिनेन और इब्राहिम (2006) ने की। जेरोन्टोलॉजी और जेरियाट्रिक्स के अभिलेखागार में छपा यह अध्ययन विभिन्न सांस्कृतिक संदर्भों में वृद्ध महिलाओं में दिव्यांगता से सामाजिक-आर्थिक कारकों के जुड़ाव को समझने पर केंद्रित है। शोध के निष्कर्षों ने बढ़ती उम्र की आबादी में दिव्यांगता के सामाजिक निर्धारकों पर व्यापक ज्ञान में योगदान दिया।

बधिर व्यक्तियों में रिश्तों, कामुकता और अनुकूलन के जटिल अंतर्संबंधों पर टैलेपोरोस और मैककेबे (2003) ने रोशनी डाली। यौन और संबंध थेरेपी में छपा उनका अध्ययन रिश्तों और कामुकता के क्षेत्र में बधिर व्यक्तियों की भलाई को प्रभावित करने वाली बहुमुखी गतिशीलताओं की जांच करता है। शोध के निष्कर्षों ने इस समूह द्वारा अनुभव की गई विशेष चुनौतियों और अनुकूलन की समझ में मूल्यवान अंतर्दृष्टि दी।

दिव्यांग बुजुर्गों में अवसाद पर स्वास्थ्य, सामाजिक सहयोग गुणवत्ता और पुनर्वास के प्रभाव की जांच होरोविट्ज़, रेनहार्ट, बोर्नर और ट्रेविस (2003) ने की। एजिंग एंड मेंटल हेल्थ में छपा यह अध्ययन स्वास्थ्य स्थिति, सामाजिक सहयोग की गुणवत्ता और पुनर्वास भागीदारी सहित विभिन्न कारकों द्वारा दिव्यांग वृद्ध वयस्कों के मानसिक स्वास्थ्य में योगदान की जांच करता है। शोध के निष्कर्षों ने इस समूह में अवसाद पर बहुमुखी प्रभावों की समझ बढ़ाई।

अध्ययन के उद्देश्य

- I बधिर व्यक्तियों की चुनौतियों का सामाजिक समायोजन पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभाव का मूल्यांकन करना।
- II बधिर व्यक्तियों की चुनौतियों का मनोवैज्ञानिक स्तर पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभाव की जांच करना।
- III बधिर व्यक्तियों की चुनौतियों का शिक्षण प्रक्रिया पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभाव का विश्लेषण करना।
- IV बधिर व्यक्तियों की चुनौतियों का सहयोग एवं समर्थन पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभाव का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ

H1: बधिर व्यक्तियों की चुनौतियाँ सामाजिक समायोजन पर नकारात्मक प्रभाव डालती हैं।

H2: बधिर व्यक्तियों की चुनौतियाँ मनोवैज्ञानिक स्तर पर नकारात्मक प्रभाव डालती हैं।

H3: बधिर व्यक्तियों की चुनौतियाँ शिक्षण पर नकारात्मक प्रभाव डालती हैं।

H4: बधिर व्यक्तियों की चुनौतियाँ सहयोग पर नकारात्मक प्रभाव डालती हैं।

अध्ययन की पद्धति

यह अध्ययन एक मात्रात्मक अनुसंधान डिज़ाइन पर आधारित था, जिसमें प्रतिगमन विश्लेषण का उपयोग किया गया। अध्ययन का उद्देश्य बधिर व्यक्तियों की चुनौतियों का विभिन्न आश्रित चरों जैसे सामाजिक समायोजन, मनोवैज्ञानिक स्तर, शिक्षण, और सहयोग पर प्रभाव का मूल्यांकन करना था। अध्ययन में सांख्यिकीय मॉडलिंग का उपयोग करके पूर्वानुमानक चर और आश्रित चरों के बीच संबंधों की जांच की गई, जिसमें ज़ी-मान, बीटा गुणांक, और पी-मान जैसे पैरामीटरों का आकलन शामिल था। सभी परिणामों को 95% विश्वास अंतराल के साथ प्रस्तुत किया गया ताकि अनुमानों की विश्वसनीयता सुनिश्चित हो सके। अध्ययन की जनसंख्या सरकारी बधिर एवं मूक महाविद्यालय, जयपुर में नामांकित दिव्यांग प्रतिभागियों पर आधारित रही। नमूना चयन के लिए सुविधा नमूना विधि का उपयोग किया गया, जिसमें महाविद्यालय के उपलब्ध दिव्यांग छात्रों को शामिल किया गया। कुल 120 प्रतिभागियों से डेटा प्राप्त हुआ, जो अध्ययन के लिए पर्याप्त नमूना आकार माना गया ताकि सांख्यिकीय शक्ति सुनिश्चित हो सके। प्रतिभागियों की गोपनीयता और नैतिकता का पूर्ण ध्यान रखा गया, और सभी से सूचित सहमति प्राप्त की गई।

डेटा संग्रह के लिए एक संरचित प्रश्नावली का उपयोग किया गया, जिसमें लिकर्ट पैमाने आधारित प्रश्न शामिल थे। प्रश्नावली को दो मुख्य भागों में विभाजित किया गया: (i) पूर्वानुमानक चर के रूप में बधिर व्यक्तियों की चुनौतियों से संबंधित आइटम, और (ii) आश्रित चरों जैसे सामाजिक समायोजन, मनोवैज्ञानिक स्तर, शिक्षण, तथा सहयोग से संबंधित आइटम। प्रश्नावली की विश्वसनीयता की जांच क्रोनबैक अल्फा से की गई, जो 0.80 से ऊपर पाई गई। डेटा संग्रह व्यक्तिगत रूप से महाविद्यालय परिसर में किया गया, जिसमें प्रतिभागियों को सहायक उपकरणों की मदद से प्रश्नावली भरने में सहायता प्रदान की गई। डेटा संग्रह की अवधि लगभग 2-3 महीने रही, और कोई भी अपूर्ण या अमान्य प्रतिक्रियाओं को बाहर रखा गया।

डेटा विश्लेषण के लिए सांख्यिकीय सॉफ्टवेयर जैसे एसपीएसएस या आर का उपयोग किया गया। मुख्य रूप से लॉजिस्टिक प्रतिगमन या रैखिक प्रतिगमन मॉडल लागू किए गए, जिसमें ज़ी-परीक्षण का उपयोग करके महत्वपूर्णता का परीक्षण किया गया। प्रत्येक आश्रित चर के लिए अनुमानित मान, मानक त्रुटि, निम्न तथा उच्च सीमा, बीटा गुणांक, ज़ी-मान, और पी-मान की गणना की गई। सभी परीक्षणों में 95% विश्वास अंतराल का उपयोग किया गया ताकि परिणामों की सटीकता और सामान्यीकरण सुनिश्चित हो सके। पी-मान $< .001$ पर महत्वपूर्ण पाए गए सभी संबंधों को सांख्यिकीय रूप से मजबूत माना गया। डेटा की सामान्यता और बहुरेखीयता की जांच भी की गई ताकि मॉडल की वैधता बनी रहे।

तालिका 1 - मॉडल की जानकारी

अनुमान विधि	ML
प्रेक्षणों (अवलोकनों) की संख्या	120
स्वतंत्र मापदंडों की संख्या	18
अभिसरित	TRUE

उपयोगकर्ता मॉडल का लॉग-संभाव्यता मान	-170.717
अप्रतिबंधित मॉडल का लॉग-संभाव्यता मान	-170.717
मॉडल	'सामाजिक समायोजन' ~ 'बधिर व्यक्तियों की चुनौतियों' 'मनोवैज्ञानिक स्तर' ~ 'बधिर व्यक्तियों की चुनौतियों' 'शिक्षण' ~ 'बधिर व्यक्तियों की चुनौतियों' 'सहयोग' ~ 'बधिर व्यक्तियों की चुनौतियों'

दी गई तालिका 1 मॉडल की जानकारी को दर्शाती है, जिसमें प्रयुक्त सांख्यिकीय मॉडल की संरचना, अनुमान विधि और विश्वसनीयता से संबंधित प्रमुख तथ्यों का वर्णन किया गया है। इस मॉडल में अनुमान विधि के रूप में अधिकतम संभाव्यता विधि (Maximum Likelihood – ML) का उपयोग किया गया है, जो जटिल संबंधों के आकलन के लिए एक मानक और विश्वसनीय तकनीक मानी जाती है। अध्ययन में कुल 120 प्रेक्षकों (अवलोकनों) को शामिल किया गया है, जो विश्लेषण के लिए पर्याप्त नमूना आकार को दर्शाता है। मॉडल में 18 स्वतंत्र मापदंडों का अनुमान लगाया गया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि मॉडल में कई चर एवं उनके प्रभावों को एक साथ समझने का प्रयास किया गया है।

तालिका से यह भी ज्ञात होता है कि मॉडल सफलतापूर्वक अभिसरित (Converged = TRUE) हुआ है, अर्थात् अनुमान प्रक्रिया स्थिर समाधान तक पहुँच गई है और प्राप्त परिणाम सांख्यिकीय रूप से विश्वसनीय माने जा सकते हैं। उपयोगकर्ता मॉडल तथा अप्रतिबंधित मॉडल दोनों का लॉग-संभाव्यता मान -170.717 समान है, जो यह संकेत देता है कि प्रस्तावित मॉडल डेटा के साथ अच्छी तरह फिट बैठता है और किसी अतिरिक्त प्रतिबंध के कारण मॉडल की व्याख्यात्मक क्षमता में कमी नहीं आई है।

मॉडल संरचना के अनुसार, बधिर व्यक्तियों की चुनौतियाँ स्वतंत्र चर के रूप में प्रयुक्त की गई हैं, जिनका प्रभाव चार प्रमुख आश्रित चरों पर परखा गया है—सामाजिक समायोजन, मनोवैज्ञानिक स्तर, शिक्षण, और सहयोग। इसका अर्थ यह है कि अध्ययन यह विश्लेषण करता है कि बधिर व्यक्तियों को सामना करनी वाली चुनौतियाँ उनके सामाजिक जीवन में समायोजन, मानसिक एवं भावनात्मक स्थिति, शिक्षा से जुड़ी स्थिति तथा प्राप्त सहयोग के स्तर को किस प्रकार प्रभावित करती हैं। समग्र रूप से, यह मॉडल बधिरों से जुड़ी चुनौतियों के बहुआयामी प्रभावों को समझने हेतु एक सुव्यवस्थित और सांख्यिकीय रूप से सुदृढ़ ढाँचा प्रस्तुत करता है।

तालिका 2 - मॉडल परीक्षण

लेबल	χ^2	df	p
आधारभूत मॉडल	1357	10	<.001

दी गई तालिका 2 मॉडल परीक्षण के परिणामों को प्रस्तुत करती है, जिसमें आधारभूत मॉडल की उपयुक्तता (Model Fit) का मूल्यांकन किया गया है। इस तालिका के अनुसार, आधारभूत मॉडल के लिए कार्-वर्ग (χ^2) का मान 1357 प्राप्त हुआ है, जिसकी स्वतंत्रता की डिग्री (df) 10 है। इतना उच्च χ^2

मान यह संकेत देता है कि प्रेक्षित आँकड़ों और मॉडल द्वारा अनुमानित मानों के बीच पर्याप्त अंतर मौजूद है।

साथ ही, इस परीक्षण का p -मान $< .001$ है, जो अत्यधिक सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण है। इसका अर्थ यह है कि आधारभूत मॉडल शून्य परिकल्पना को अस्वीकार करता है और यह दर्शाता है कि यह मॉडल डेटा के साथ अच्छी तरह मेल नहीं खाता। सामान्यतः, यदि χ^2 परीक्षण का परिणाम महत्वपूर्ण (significant) होता है, तो इसका आशय यह होता है कि मॉडल में अभी सुधार की आवश्यकता है अथवा कुछ महत्वपूर्ण संबंधों या चरों को मॉडल में शामिल नहीं किया गया है।

समग्र रूप से, यह तालिका यह स्पष्ट करती है कि प्रस्तुत आधारभूत मॉडल डेटा की वास्तविक संरचना को पर्याप्त रूप से स्पष्ट नहीं कर पा रहा है। अतः बेहतर मॉडल फिट प्राप्त करने के लिए संशोधित, विस्तारित या वैकल्पिक मॉडल की आवश्यकता हो सकती है, जिससे बधिर व्यक्तियों से संबंधित अध्ययन में चरों के बीच संबंधों को अधिक सटीक रूप से समझा जा सके।

तालिका 3 - पैरामीटर अनुमान

				95% विश्वास अंतराल				
आश्रित चर	पूर्वानुमानक चर	अनुमानित मान	मानक त्रुटि	निम्न सीमा	उच्च सीमा	बीटा गुणांक	z- मान	p-मान (प्रायिकता मान)
सामाजिक समायोजन	बधिर व्यक्तियों की चुनौतियों	-0.871	0.0320	- 0.934	- 0.809	- 0.928	- 27.2	<.001
मनोवैज्ञानिक स्तर	बधिर व्यक्तियों की चुनौतियों	-1.033	0.0271	- 1.087	- 0.980	- 0.961	- 38.2	<.001
शिक्षण	बधिर व्यक्तियों की चुनौतियों	-0.959	0.0436	- 1.044	- 0.873	- 0.895	- 22.0	<.001
सहयोग	बधिर व्यक्तियों की चुनौतियों	-1.036	0.0232	- 1.081	- 0.990	- 0.971	- 44.6	<.001

दी गई तालिका 3 पैरामीटर अनुमान के अंतर्गत बधिर व्यक्तियों की चुनौतियों का विभिन्न आश्रित चरों पर प्रभाव सांख्यिकीय रूप से प्रस्तुत किया गया है। तालिका में अनुमानित मान, मानक त्रुटि, 95% विश्वास अंतराल, बीटा गुणांक, z-मान तथा p-मान के आधार पर प्रत्येक संबंध की दिशा, तीव्रता और महत्व को समझा जा सकता है।

सामाजिक समायोजन के संदर्भ में, बधिर व्यक्तियों की चुनौतियों का अनुमानित मान -0.871 पाया गया है। यह नकारात्मक मान दर्शाता है कि जैसे-जैसे चुनौतियाँ बढ़ती हैं, सामाजिक समायोजन का स्तर

घटता जाता है। इसकी मानक त्रुटि 0.0320 है, जो अनुमान की सटीकता को दर्शाती है। 95% विश्वास अंतराल -0.934 से -0.809 के बीच है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि यह प्रभाव स्थिर और विश्वसनीय है। बीटा गुणांक -0.928 सामाजिक समायोजन पर अत्यंत प्रबल नकारात्मक प्रभाव को इंगित करता है। साथ ही z-मान -27.2 तथा p-मान $< .001$ यह प्रमाणित करते हैं कि यह प्रभाव सांख्यिकीय रूप से अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

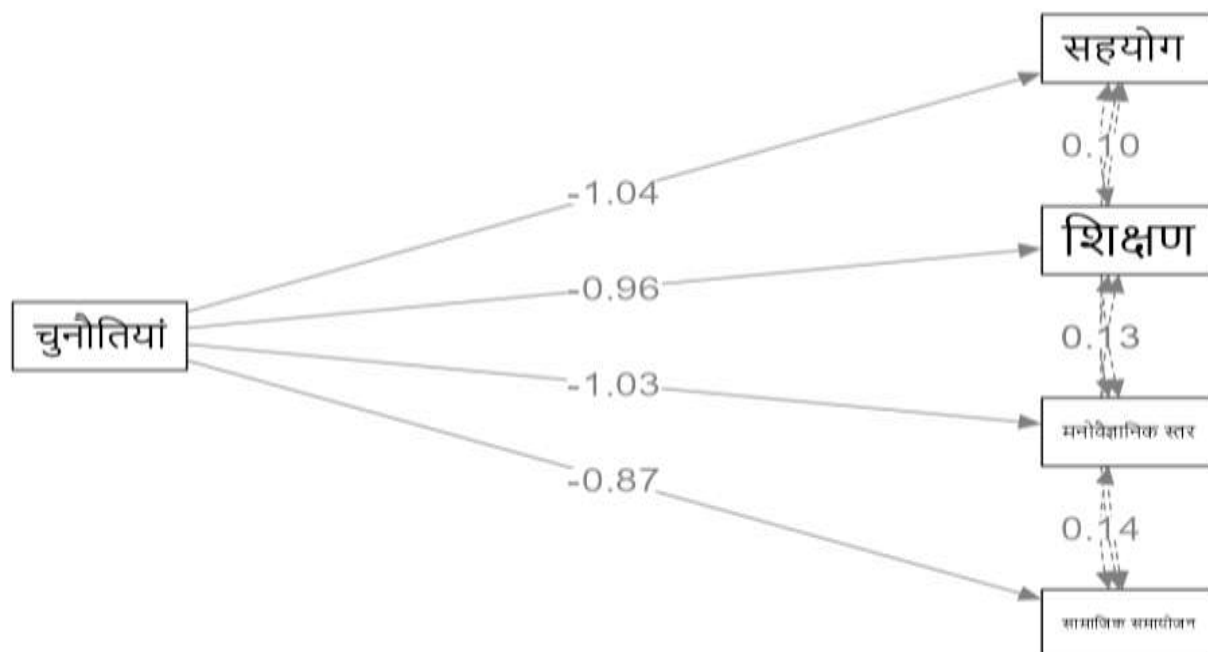
मनोवैज्ञानिक स्तर के लिए, अनुमानित मान -1.033 प्राप्त हुआ है, जो यह दर्शाता है कि बधिर व्यक्तियों की चुनौतियाँ उनके मनोवैज्ञानिक स्तर को गहराई से नकारात्मक रूप में प्रभावित करती हैं। मानक त्रुटि 0.0271 अपेक्षाकृत कम है, जो अनुमान की उच्च विश्वसनीयता को दर्शाती है। इसका 95% विश्वास अंतराल -1.087 से -0.980 के बीच है। बीटा गुणांक -0.961 अत्यंत मजबूत नकारात्मक प्रभाव को दर्शाता है। z-मान -38.2 तथा p-मान $< .001$ यह स्पष्ट करते हैं कि यह संबंध अत्यधिक सार्थक और निर्णायक है।

शिक्षण के संदर्भ में, बधिर व्यक्तियों की चुनौतियों का अनुमानित मान -0.959 है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि चुनौतियों में वृद्धि के साथ शिक्षण से जुड़ी स्थिति या प्रदर्शन में गिरावट आती है। इसकी मानक त्रुटि 0.0436 है तथा 95% विश्वास अंतराल -1.044 से -0.873 के बीच पाया गया है। बीटा गुणांक -0.895 यह दर्शाता है कि शिक्षण पर भी इन चुनौतियों का सशक्त नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। z-मान -22.0 और p-मान $< .001$ इस प्रभाव को सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण सिद्ध करते हैं।

सहयोग के मामले में, अनुमानित मान -1.036 प्राप्त हुआ है, जो यह दर्शाता है कि बधिर व्यक्तियों की चुनौतियाँ सहयोग के स्तर को गंभीर रूप से प्रभावित करती हैं। मानक त्रुटि 0.0232 अत्यंत कम है, जिससे अनुमान की उच्च सटीकता स्पष्ट होती है। 95% विश्वास अंतराल -1.081 से -0.990 के बीच है। बीटा गुणांक -0.971 सहयोग पर सबसे अधिक नकारात्मक प्रभाव को दर्शाता है। z-मान -44.6 तथा p-मान $< .001$ यह पुष्टि करते हैं कि यह प्रभाव अत्यंत महत्वपूर्ण और विश्वसनीय है।

समग्र रूप से, यह तालिका स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि बधिर व्यक्तियों की चुनौतियाँ सामाजिक समायोजन, मनोवैज्ञानिक स्तर, शिक्षण तथा सहयोग—इन सभी आयामों पर प्रबल, नकारात्मक और सांख्यिकीय रूप से अत्यधिक महत्वपूर्ण प्रभाव डालती हैं। इनमें विशेष रूप से सहयोग और मनोवैज्ञानिक स्तर पर प्रभाव सर्वाधिक तीव्र पाया गया है, जो नीति-निर्माण, सामाजिक हस्तक्षेप तथा सहयोगात्मक कार्यक्रमों की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

रैखिक प्रतिगमन 1 - पथ आरेख



तालिका 4 -तालिका: चर-युग्मों के प्रभाव

				95% विश्वास अंतराल				
चर 1	चर 2	अनुमानित मान	मानक त्रुटि	निम्न सीमा	उच्च सीमा	बीटा गुणांक	z-मान	p-मान (प्रायिकता मान)
सामाजिक समायोजन	सामाजिक समायोजन	0.231	0.0298	0.1724	0.289	0.1394	7.75	<.001
मनोवैज्ञानिक स्तर	मनोवैज्ञानिक स्तर	0.165	0.0213	0.1233	0.207	0.0761	7.75	<.001
शिक्षण	शिक्षण	0.427	0.0551	0.319	0.535	0.1985	7.75	<.001
सहयोग	सहयोग	0.121	0.0157	0.0906	0.152	0.0568	7.75	<.001
सामाजिक समायोजन	मनोवैज्ञानिक स्तर	0.143	0.0221	0.1001	0.187	0.7348	6.49	<.001
सामाजिक समायोजन	शिक्षण	0.129	0.031	0.068	0.189	0.41	4.16	<.001
सामाजिक समायोजन	सहयोग	0.13	0.0194	0.0925	0.168	0.7797	6.74	<.001
मनोवैज्ञानिक स्तर	शिक्षण	0.135	0.0272	0.0816	0.188	0.5081	4.96	<.001
मनोवैज्ञानिक स्तर	सहयोग	0.109	0.0163	0.0774	0.141	0.7735	6.7	<.001
शिक्षण	सहयोग	0.104	0.0229	0.0595	0.149	0.4582	4.56	<.001
बधिर व्यक्तियों की चुनौतियों	बधिर व्यक्तियों की चुनौतियों	1.877	0	1.8766	1.877	1		

दी गई तालिका 4, 95% विश्वास अंतराल के साथ चरों के पारस्परिक संबंधों (Covariances/Variances) को प्रस्तुत करती है। इसमें सामाजिक समायोजन, मनोवैज्ञानिक स्तर, शिक्षण, सहयोग तथा बधिर व्यक्तियों की चुनौतियों के बीच स्व-प्रभाव (variance) एवं आपसी संबंध (covariance) का सांख्यिकीय आकलन किया गया है।

तालिका के प्रथम भाग में प्रत्येक चर का स्वयं के साथ संबंध दर्शाया गया है, जो उस चर की आंतरिक परिवर्तनशीलता को स्पष्ट करता है। सामाजिक समायोजन के लिए अनुमानित मान 0.231 है, जिसका 95% विश्वास अंतराल 0.1724 से 0.289 के बीच है। z-मान 7.75 और p-मान $< .001$ यह दर्शाते हैं कि सामाजिक समायोजन में पाई जाने वाली परिवर्तनशीलता सांख्यिकीय रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसी प्रकार मनोवैज्ञानिक स्तर (अनुमानित मान 0.165), शिक्षण (0.427) तथा सहयोग (0.121) के लिए भी उनके विश्वास अंतराल संकुचित हैं और p-मान $< .001$ है, जिससे स्पष्ट होता है कि सभी चरों की आंतरिक स्थिरता और विश्वसनीयता उच्च स्तर की है।

तालिका के दूसरे भाग में विभिन्न चरों के बीच आपसी संबंध को दर्शाया गया है। सामाजिक समायोजन और मनोवैज्ञानिक स्तर के बीच अनुमानित मान 0.143 है, जो यह संकेत देता है कि दोनों के बीच सकारात्मक और मजबूत संबंध विद्यमान है। इसका बीटा गुणांक 0.7348, z-मान 6.49 तथा p-मान $< .001$ यह प्रमाणित करते हैं कि यह संबंध अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसी प्रकार सामाजिक समायोजन और शिक्षण (अनुमानित मान 0.129) तथा सामाजिक समायोजन और सहयोग (0.130) के बीच भी सकारात्मक एवं सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण संबंध पाए गए हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि बेहतर सामाजिक समायोजन शिक्षण एवं सहयोग के स्तर को भी सुदृढ़ करता है।

मनोवैज्ञानिक स्तर का शिक्षण (0.135) और सहयोग (0.109) के साथ भी सकारात्मक तथा महत्वपूर्ण संबंध पाया गया है। इसका अर्थ यह है कि मनोवैज्ञानिक रूप से बेहतर स्थिति में होने पर शिक्षण से जुड़ाव और सहयोग की उपलब्धता दोनों में वृद्धि होती है। इसी क्रम में शिक्षण और सहयोग के बीच अनुमानित मान 0.104 यह दर्शाता है कि ये दोनों आयाम भी आपस में सकारात्मक रूप से जुड़े हुए हैं। अंत में, बधिर व्यक्तियों की चुनौतियों का स्वयं के साथ अनुमानित मान 1.877 तथा बीटा गुणांक 1.000 है, जो यह दर्शाता है कि यह चर मॉडल में एक मानकीकृत एवं पूर्ण रूप से परिभाषित प्रमुख स्वतंत्र संरचना है।

समग्र रूप से, यह तालिका यह स्पष्ट करती है कि सामाजिक समायोजन, मनोवैज्ञानिक स्तर, शिक्षण और सहयोग—ये सभी आयाम न केवल आंतरिक रूप से स्थिर हैं, बल्कि आपस में भी सकारात्मक, सुदृढ़ और सांख्यिकीय रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण संबंध रखते हैं। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि बधिर व्यक्तियों से जुड़े इन सामाजिक-मनोवैज्ञानिक एवं शैक्षिक आयामों को अलग-अलग न देखकर एक समग्र दृष्टिकोण से समझना और संबोधित करना आवश्यक है।

निष्कर्ष

अध्ययन का उद्देश्य यह जानना था कि बधिर व्यक्तियों द्वारा अनुभव की जाने वाली चुनौतियाँ उनके सामाजिक समायोजन, मनोवैज्ञानिक स्तर, शिक्षण तथा सहयोग से किस प्रकार संबद्ध थीं। प्राप्त निष्कर्षों ने यह संकेत दिया कि चुनौतियाँ बहुआयामी रूप से व्यक्ति के सामाजिक और मनो-शैक्षिक कार्यकरण को प्रभावित करती हैं। इस प्रकार, चुनौतियों को केवल शारीरिक सीमाओं तक सीमित न मानकर उन्हें

सामाजिक सहभागिता, शैक्षिक प्रक्रियाओं और सहायतागत नेटवर्क पर प्रभाव डालने वाले कारकों के रूप में देखा गया है।

परिणामों से यह व्याख्या उभरकर आई कि चुनौतियाँ केवल व्यक्तिगत स्तर पर अनुभव होने वाली कठिनाइयाँ नहीं हैं, बल्कि वे संदर्भ-निर्भर बाधाएँ हैं, जिनका असर सामाजिक भूमिकाओं के निर्वाह, आत्म-धारणा, भावनात्मक संतुलन, तथा सीखने के अवसरों पर पड़ता है। सामाजिक समायोजन पर नकारात्मक प्रभाव यह सूचित करता है कि चुनौतियाँ व्यक्ति के सामाजिक संपर्क, स्वीकार्यता, तथा समुदाय/संस्था में सहभागिता को सीमित करती हैं, जिससे समायोजन-क्षमता कमजोर हुई। इसी क्रम में मनोवैज्ञानिक स्तर पर नकारात्मक प्रवृत्ति यह दर्शाती रही कि चुनौतियों का दीर्घकालिक अनुभव मानसिक दबाव, निराशा, या आत्मविश्वास में कमी जैसी स्थितियाँ बढ़ा सकता है, विशेषकर तब जब पर्याप्त सहायता या समावेशी वातावरण उपलब्ध नहीं रहा।

शिक्षण पर प्रतिकूल संबंध ने संकेत दिया कि चुनौतियाँ शैक्षिक संसाधनों तक पहुँच, कक्षा/संस्थान की अनुकूलता, तथा सीखने की निरंतरता को प्रभावित करती हैं। यह भी संभव है कि बाधा-मुक्त ढाँचे, सहायक तकनीक, लचीली शिक्षण-रणनीतियाँ और संवेदनशील शैक्षिक नीतियों की कमी ने इन चुनौतियों के प्रभाव को बढ़ाया हो। सहयोग पर नकारात्मक प्रभाव ने इस बात की ओर ध्यान दिलाया कि चुनौतियाँ बढ़ने पर व्यक्ति द्वारा अनुभव किए जाने वाले समर्थन—चाहे वह पारिवारिक, सहपाठी, समुदाय या संस्थागत हो—में कमी महसूस हुई या सहयोग प्राप्त करने/माँगने की प्रक्रिया अधिक कठिन बनी। यह स्थिति एक चक्र (cycle) की तरह कार्य कर सकती है, जहाँ बढ़ती चुनौतियाँ सहयोग को सीमित करती हैं। और सीमित सहयोग आगे चलकर समायोजन तथा मनोवैज्ञानिक स्थिति को और कमजोर करता रहा। अंततः, अध्ययन ने यह स्थापित किया कि बधिर व्यक्तियों की चुनौतियाँ सामाजिक समायोजन, मनोवैज्ञानिक स्तर, शिक्षण और सहयोग—चारों आयामों के लिए प्रतिकूल रूप से संबद्ध हैं। निष्कर्षों से यह स्पष्ट हुआ कि यदि चुनौतियों को कम करने के लिए बाधा-मुक्त वातावरण, समावेशी शिक्षण-व्यवस्थाएँ, मनोवैज्ञानिक समर्थन तथा सामाजिक/संस्थागत सहयोग तंत्र सुदृढ़ किए गए होते, तो इन नकारात्मक प्रभावों को घटाया जा सकता है। इसलिए अध्ययन ने दिव्यांगता को केवल व्यक्ति-केंद्रित समस्या के बजाय व्यवस्था/पर्यावरण-केंद्रित हस्तक्षेप की आवश्यकता वाले मुद्दे के रूप में रेखांकित किया।

अध्ययन के व्यावहारिक निहितार्थ

अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर यह व्यावहारिक संकेत मिला कि बधिर व्यक्तियों की चुनौतियाँ केवल व्यक्तिगत स्तर तक सीमित नहीं रहीं, बल्कि सामाजिक समायोजन, मनोवैज्ञानिक स्थिति, शिक्षण और सहयोग जैसे प्रमुख जीवन-क्षेत्रों में बाधा बनती रहीं; इसलिए हस्तक्षेप बहु-स्तरीय और समावेशी रखे जाना आवश्यक रहा। शैक्षिक संस्थानों के संदर्भ में बाधा-मुक्त पहुँच, सहायक उपकरण/तकनीक, लचीली कक्षा-व्यवस्थाएँ, शिक्षकों का समावेशी पेडागॉजी पर प्रशिक्षण तथा व्यक्तिगत सहायता-योजना जैसी व्यवस्थाएँ व्यवहार में उपयोगी रहीं ताकि चुनौतियों का सीखने पर प्रतिकूल प्रभाव कम किया जा सके। इसी क्रम में मानसिक स्वास्थ्य के लिए नियमित परामर्श, प्रारम्भिक स्क्रीनिंग, रेफरल-तंत्र तथा आत्म-सम्मान, मुकाबला-कौशल और तनाव-प्रबंधन पर आधारित समूह-हस्तक्षेप महत्वपूर्ण रहे, क्योंकि चुनौतियाँ मनोवैज्ञानिक स्तर को प्रभावित करती रहीं। सामाजिक समर्थन को सुदृढ़ करने हेतु परिवार, सहपाठी, समुदाय और संस्थान को जोड़कर सहयोग-तंत्र विकसित करना, पीयर-मेंटोरिंग, सपोर्ट-ग्रुप

और सामाजिक-कार्य आधारित हस्तक्षेप लागू करना आवश्यक निहितार्थ रहा, जिससे सामाजिक समायोजन और सहयोग दोनों को मजबूती मिल सकती थी। नीति और प्रशासन स्तर पर योजनाओं में केवल सहायता/उपकरण तक सीमित न रहकर पहुँच, समावेशन, मनोवैज्ञानिक सहायता और सामाजिक सहभागिता के एकीकृत प्रावधान, साथ ही पहुँच-ऑडिट, शिकायत-निवारण और समावेशी मानकों की नियमित निगरानी जैसी व्यवस्थाएँ निष्कर्षों के अनुरूप व्यावहारिक रूप से सार्थक रहें। अंततः, कार्यक्रम-डिज़ाइन और आगे के शोध में “चुनौतियाँ” को शारीरिक-सामाजिक-संस्थागत आयामों में बहुआयामी रूप से मापना तथा मिश्रित/गुणात्मक फॉलो-अप द्वारा यह स्पष्ट करना उपयोगी रहा कि कौन-सी विशिष्ट बाधाएँ किस परिणाम-क्षेत्र को अधिक प्रभावित करती रहें।

भविष्य में अनुसंधान की संभावना

भविष्य के अध्ययन इस विषय को अधिक व्यापक और गहन रूप से समझने के लिए बहु-आयामी दिशा में आगे बढ़ सकते थे, जहाँ बधिर व्यक्तियों की “चुनौतियों” को केवल सामान्य सूचक के रूप में नहीं बल्कि पहुँच-सम्बन्धी बाधाएँ, सामाजिक दृष्टिकोण/कलंक, संस्थागत समर्थन की उपलब्धता, आर्थिक संसाधन, और सहायक तकनीक की सुलभता जैसी विशिष्ट उप-श्रेणियों में विभाजित करके उनके अलग-अलग प्रभावों की जाँच की जा सकती थी। आगे के शोध में बड़े और विविध नमूनों (ग्रामीण-शहरी, विभिन्न आयु-समूह, अलग प्रकार की दिव्यांगता, तथा अलग शैक्षिक/व्यावसायिक संदर्भ) पर तुलनात्मक विश्लेषण करके निष्कर्षों की सामान्यीकरण-क्षमता बढ़ाई जा सकती थी, तथा यह भी देखा जा सकता था कि लिंग, सामाजिक-आर्थिक स्तर, परिवार का समर्थन, और संस्थागत समावेशन जैसे कारक इन संबंधों को किस प्रकार मध्यस्थ/परिमार्जक (mediator/moderator) के रूप में प्रभावित करते थे। इसके अतिरिक्त, अनुदैर्घ्य (longitudinal) डिज़ाइन अपनाकर समय के साथ चुनौतियों, मानसिक स्थिति, सीखने और सहयोग में होने वाले बदलावों की दिशा स्पष्ट की जा सकती थी, जबकि गुणात्मक या मिश्रित-पद्धति अध्ययन प्रतिभागियों के अनुभवों, बाधाओं के स्रोतों और सहायता-प्रणालियों की वास्तविक उपयोगिता को अधिक स्पष्ट कर सकते थे। अंत में, भविष्य का स्कोप हस्तक्षेप-आधारित शोध तक भी विस्तारित हो सकता था, जहाँ समावेशी शिक्षण रणनीतियों, काउंसलिंग/पीयर-मेंटोरिंग मॉडल, तथा बाधा-मुक्त ढाँचागत सुधारों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करके नीति और व्यवहार, दोनों स्तरों पर अधिक ठोस अनुशासनात्मक विकसित की जा सकती थीं।

संदर्भ सूची

- 1 अलावदी, एम. एन. जे. (2020). सामाजिक अनुकूलन और इसका सामाजिक एवं आर्थिक स्तरों से संबंध: दृष्टिबाधित व्यक्तियों का. पालआर्क्स जर्नल ऑफ आर्कियोलॉजी ऑफ इजिप्ट/इजिप्टोलॉजी, 17(6), 2998-3006.
- 2 काराबुलतोवा, आई. एस., किम, एल. आई., आजनाबाएवा, जी. के., एरमाकोवा, एन. जी., और कोन्नोवा, ओ. ए. (2015). दिव्यांग व्यक्तियों के सामाजिक पुनर्वास में आधुनिक समावेशी प्रवचन प्रथाओं का सामाजिक-आर्थिक प्रभाव. मेडिटरेनियन जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज, 6(6 S3), 11-16.
- 3 कारोना, सी., मोरेयरा, एच., सिल्वा, एन., क्रेस्पो, सी., और कैनावारो, एम. सी. (2014). सेरेब्रल पाल्सी वाले बच्चों एवं किशोरों में अनुकूलन परिणामों पर सामाजिक सहयोग का प्रभाव. डिसेबिलिटी एंड रिहैबिलिटेशन, 36(7), 584-592.
- 4 कोहेन, सी. बी., और नेपोलिटानो, डी. (2013). दिव्यांगता का अनुकूलन. इन डिसेबिलिटी एंड सोशल वर्क एजुकेशन (पीपी. 135-155). राउटलेज.

- 5 गर्शिक, टी. जे., और मिलर, ए. एस. (2013). मर्दानगी और बधिर ता के चौराहे पर लिंग पहचान. टॉवर्ड अ न्यू साइकोलॉजी ऑफ जेंडर (पीपी. 455-475). राउटलेज.
- 6 जेन्सेन, एम. पी., मूर, एम. आर., बोको, टी. बी., एहड, डी. एम., और एंगेल, जे. एम. (2011). बधिर व्यक्तियों में पुराने दर्द अनुकूलन के मनोसामाजिक कारक: एक व्यवस्थित समीक्षा. आर्काइव्स ऑफ फिजिकल मेडिसिन एंड रिहैबिलिटेशन, 92(1), 146-160.
- 7 जेन्सेन, एम. पी., स्मिथ, ए. ई., बॉम्बार्डियर, सी. एच., यॉर्कस्टन, के. एम., मीरो, जे., और मोल्टन, आई. आर. (2014). सामाजिक सहयोग, अवसाद एवं बधिर ता: आयु एवं नैदानिक समूह प्रभाव. डिसेबिलिटी एंड हेल्थ जर्नल, 7(2), 164-172.
- 8 टैलेपोरोस, जी., और मैककेबे, एम. पी. (2003). बधिर व्यक्तियों में रिश्ते, कामुकता एवं अनुकूलन. सेक्सुअल एंड रिलेशनशिप थेरेपी, 18(1), 25-43.
- 9 डन, डी. एस., और ब्रॉडी, सी. (2008). अर्जित बधिर के बाद अच्छे जीवन की परिभाषा. रिहैबिलिटेशन साइकोलॉजी, 53(4), 413-425.
- 10 डाइजेनारो रीड, एफ. डी., मैकइंटायर, एल. एल., ड्यूसेक, जे., और किंटेरो, एन. (2011). समावेशी शिक्षा सेटिंग में दिव्यांग बच्चों की दोस्ती, समस्या व्यवहार एवं सामाजिक अनुकूलन का प्रारंभिक मूल्यांकन. जर्नल ऑफ डेवलपमेंटल एंड फिजिकल डिसेबिलिटीज, 23, 477-489.
- 11 थॉमसन, आर. जी. (2017). असाधारण शरीर: अमेरिकी संस्कृति और साहित्य में बधिर ता का चित्रण. कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस.
- 12 फेलिजार्डो, एस., रिबेरो, ई., और अमांटे, एम. जे. (2016). दिव्यांगता के लिए माता-पिता का अनुकूलन, तनाव संकेतक एवं सामाजिक सहयोग का प्रभाव. प्रोसीडिया-सोशल एंड बिहेवियरल साइंसेज, 217, 830-837.
- 13 बरघी ईरानी, जेड., बागियान कुलहमर्ज, एम. जे., और शरीफी, एफ. (2016). शारीरिक-गतिशीलता दिव्यांग छात्रों के भावनात्मक अनुकूलन, मानसिक स्वास्थ्य एवं आत्म-सम्मान पर सामाजिक कौशल प्रशिक्षण का प्रभाव. बायएनुअल जर्नल ऑफ एप्लाइड काउंसलिंग, 6(1), 37-58.
- 14 बार्ग, सी. जे., आम्स्ट्रिंग, बी. डी., हेट्ज, एस. पी., और लैटीमर, ए. इ. (2010). बधिर ता, कलंक एवं बच्चों में शारीरिक क्रियाकलाप. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ डिसेबिलिटी, डेवलपमेंट एंड एजुकेशन, 57(4), 371-382.
- 15 ब्लोएमेन, एम. ए., बैक्स, एफ. जे., टैकेन, टी., विटिक, एच., बेनर, जे., मोलेमा, जे., और डी गूट, जे. एफ. (2015). बधिर वाले बच्चों एवं किशोरों में शारीरिक क्रियाकलापों से जुड़े कारक: एक व्यवस्थित समीक्षा. डेवलपमेंटल मेडिसिन एंड चाइल्ड न्यूरोलॉजी, 57(2), 137-148.
- 16 मजूर, ई. (2008). अर्जित बधिर वाले माता-पिता एवं उनके किशोर बच्चों के अनुकूलन पर नकारात्मक एवं सकारात्मक दिव्यांगता संबंधित घटनाओं का प्रभाव. जर्नल ऑफ चाइल्ड एंड फैमिली स्टडीज, 17, 517-537.
- 17 मरे, सी., लोम्बार्डो, ए., बेंडर, एफ., और गेर्डेस, एच. (2013). सामाजिक सहयोग: वित्तीय तनाव एवं दिव्यांग कॉलेज छात्रों के अनुकूलन के बीच संबंध पर मुख्य एवं मध्यस्थ प्रभाव. सोशल साइकोलॉजी ऑफ एजुकेशन, 16, 277-295.
- 18 मीरो, जे., डे ला वेगा, आर., गेर्ट्ज, के. जे., जेन्सेन, एम. पी., और एंगेल, जे. एम. (2019). दर्द अनुकूलन में अनुभूत पारिवारिक सामाजिक सहयोग एवं माता-पिता की प्रतिक्रियाओं की भूमिका: बधिर युवाओं में. डिसेबिलिटी एंड रिहैबिलिटेशन, 41(6), 641-648.

- 19 मैकडैनियल, जे. डब्ल्यू. (2013). बधिर ता और मानव व्यवहार: परगामॉन जनरल साइकोलॉजी श्रृंखला (वॉल. 3). एल्सीवियर.
- 20 मैगरोड, एफ., मेस, बी., ब्यूसे, ए., और ब्रोंडील, आर. (2012). दिव्यांग किशोरों एवं उनके माता-पिता की जीवन गुणवत्ता: सामाजिक सहयोग एवं लचीलेपन की मध्यस्थ भूमिका. जर्नल ऑफ डेवलपमेंटल एंड फिजिकल डिसेबिलिटीज, 24, 487-503.
- 21 मोहम्मद-अमिनजादेह, डी., अबासी, ए., असमारी-बारदेजार्ड, वाई., काजेमियन, एस., और यूनेसी, एस. जे. (2019). बधिर छात्रों एवं स्वस्थ छात्रों के मध्य भावना नियंत्रण रणनीतियों एवं अनुकूलन की तुलना. जर्नल ऑफ प्रैक्टिस इन क्लिनिकल साइकोलॉजी, 7(4), 281-288.
- 22 राउटियो, एन., एडमसन, जे., हेइकिनेन, ई., और इब्राहिम, एस. (2006). ब्रिटेन एवं ज्यवास्किला, फिनलैंड में वृद्ध महिलाओं के मध्य सामाजिक-आर्थिक स्थिति एवं दिव्यांगता के संबंध. आर्काइव्स ऑफ जेरोटोलॉजी एंड जेरियाट्रिक्स, 42(2), 141-155.
- 23 लिपका, ओ., सारिद, एम., अहरोनी जोराच, आई., बुफमैन, ए., हगाग, ए. ए., और पेरिट्ज, एच. (2020). उच्च शिक्षा का समायोजन: दिव्यांग और गैर-दिव्यांग छात्रों की तुलना. फ्रंटियर्स इन साइकोलॉजी, 11, 923.
- 24 लिपपोल्ड, टी., और बर्न्स, जे. (2009). सामाजिक सहयोग एवं बौद्धिक दिव्यांगता: बौद्धिक दिव्यांग वाले वयस्कों के सामाजिक नेटवर्क की तुलना बधिर वाले वयस्कों से. जर्नल ऑफ इंटेलेक्चुअल डिसेबिलिटी रिसर्च, 53(5), 463-470.
- 25 वलीजादेह, एस., ददखाह, बी., मोहम्मदी, ई., और हसनखानी, एच. (2014). निचले अंग विच्छेदन के अनुकूलन में आघात रोगियों की सामाजिक सहयोग की धारणा: एक गुणात्मक अध्ययन. इंडियन जर्नल ऑफ पैलिएटिव केयर, 20(3), 229-238.
- 26 वाज, एस., कॉर्डियर, आर., फॉल्कमर, एम., सिक्कारेली, एम., पार्सन्स, आर., मकॉलिफ, टी., और फॉल्कमर, टी. (2015). क्या स्कूलों को दिव्यांग छात्रों में खराब शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य, सामाजिक अनुकूलन एवं भागीदारी परिणामों की अपेक्षा करनी चाहिए? पीएलओएस वन, 10(5), e0126630.
- 27 विल्सन, एस., वाशिंगटन, एल. ए., एंगेल, जे. एम., सिओल, एम. ए., और जेन्सेन, एम. पी. (2006). बधिर युवाओं में अनुभूत सामाजिक सहयोग, मनोवैज्ञानिक अनुकूलन एवं कार्यात्मक क्षमता. रिहैबिलिटेशन साइकोलॉजी, 51(4), 322-330.
- 28 सैचिदानंद, एन., गुनुकुला, एस. के., लैम, डब्ल्यू. वाई., मैक्गुइगन, डी., न्यू आई., साइमन्स, ए. बी., विदियम-लीच, एम., और एकल, ई. ए. (2012). स्वास्थ्य सेवा छात्रों एवं पेशेवरों के नजरिए का बधिर रोगियों के प्रति: एक व्यवस्थित समीक्षा. अमेरिकन जर्नल ऑफ फिजिकल मेडिसिन एंड रिहैबिलिटेशन, 91(6), 533-545.
- 29 सॉन्ग, एच. वाई., और नाम, के. ए. (2010). रीढ़ की हड्डी की चोट वाले व्यक्तियों में मुकाबला रणनीतियां, शारीरिक कार्य एवं सामाजिक अनुकूलन. रिहैबिलिटेशन नर्सिंग जर्नल, 35(1), 8-15.
- 30 होरोविट्ज, ए., रेनहार्ट, जे. पी., बोर्नर, के., और ट्रेविस, एल. ए. (2003). दिव्यांग बुजुर्गों में अवसाद पर स्वास्थ्य, सामाजिक सहयोग गुणवत्ता एवं पुनर्वास का प्रभाव. एजिंग एंड मेंटल हेल्थ, 7(5), 342-350.